(Pages : 4) **J – 4764**

Reg. No. : .....

Name : .....

Fourth Semester M.A. Degree Examination, May 2020

Hindi

HL 241 – MODERN POETRY SINCE PRAYOGVAD

(2015 Admission Onwards)

Time : 3 Hours Max. Marks : 75

I. सही उत्तर चुनकर लिखिए।

1. तारसप्तक का संपादक कौन है?

   (अज्ञेय, धूमिल, वाजपेइ, सक्सेना)

2. नागार्जुन का असली नाम क्या है?

   (धनपतराय, चौधरी, वैद्यनाथ, कमलेश)

3. विजयदेव नारायण साही किस राक्षक के कवि है?

   (चौथा सप्तक, तीसरा सप्तक, दूसरा सप्तक, तारसप्तक)

4. धूमिल के काव्य संकलन इन में कौन सा है?

   (न आनेवाला कल, अन्धेरे में, प्रेत का बयान, संसद से सडक तक)

5. 'पुतली में संसार' किसकी कविता है?

   (कीर्ति चौधरी, काव्यायनी, अरुण कमल, नरेश मेहता)

6. 'अपने अपने अजनबी' – किस विधा की रचना है?

   (काव्य संकलन, उपन्यास, कहानी, संस्मरण)

7. 'सच सच कहूँगा

   झूठ नहीं बोलूँगा' – किस कविता की पंक्तियाँ हैं?

   (यह दीप अकेला, बात बोलेगी, प्रेत का बयान, कलगी बाजरे की)

P.T.O.

gcwcentrallibrary.in

8. इनमें अज्ञेय की कविता कौन सी है?

(नदी को बहने दो, अन्धेरे में, नदी के द्वीप, अकाल में सारस)

9. चौथा सप्तक का प्रकाशन किस वर्ष में हुआ?

(1943, 1951, 1969, 1979)

10. 'कामायनी: एक पुनर्विचार' शीर्षक समीक्षाकृति किसने लिखी है?

(अज्ञेय, मुक्तिबोध, पंत, प्रसाद)

(10 × 1 = 10 Marks)

II. किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिए।

1. अज्ञेय का व्यक्ति-वादी चिन्तन।

2. मुक्तिबोध का समाज सम्बन्धी विचार।

3. 'नदी के द्वीप' - का सन्देश।

4. 'यह दीप अकेला' - का भाव।

5. कात्यायनी की स्त्री कविता।

6. नये कवि अरुण कमल।

7. हिन्दी में सप्तक परंपरा।

(4 × 5 = 20 Marks)

III. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. ब्रह्मराक्षस कविता का कथ्य।

2. नई कविता की प्रवृत्तियाँ।

3. प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि अज्ञेय।

4. नदी के द्वीप।

(2 × 10 = 20 Marks)

gcwcentrallibrary.in

IV. (a) किन्हीं चार अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. मैं नया कवि हूँ
इसी से जानता हूँ
सत्य की चोट बहुत गहरी होती है
मैं नया कवि हूँ –
इसी से मानता हूँ।

2. हम सब के थे अपने गीत
आखिर तक गाने की शर्त
पर जाने कैसे ऐसे बदले बोल–
हम ने गाया कुछ, पर कुछ निकला अर्थ।

3. जी माल देखिए; दाम बताऊँगा
बेकाम नहीं, काम बताऊँगा
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैं ने
यह गीत सख्त सर दर्द भुलायेगा
यह गीत पिया को पास बुलाएगा।

4. अगर ज़िन्दगी की कारा में
कभी छटपटाकर मुझको आवाज़ लगाओ
और न कोई उत्तर पाओ
यही समझना कोई इसको धीरे धीरे निगल चुजा है
इस बस्ती में कोई दीप जलानेवाला नहीं बचा है।

5. दो हम को फिर झूठे युद्ध
दो हम को फिर झूठे ध्येय
हारेंगे फिर यह है तय
फिर उसको मानेंगे हम प्रभु की हार
अपने को मानेंगे फिर अपराजेय!

gcwcentrallibrary.in

6. अगर मैं तुम को ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद के भोर की नीहार–न्हाई कुई
टटकी कली चम्पे की, वगैरह, तो
नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या सूना है
या कि मेरा व्याक मैला है।

7. विगत शत पुण्य का आभास
जंगली हरी कच्ची गन्ध में बसकर
हव में तैर
बनता है गहन सन्देह
अनजानी किसी बीती हुई उस श्रेष्ठता का जो कि
दिल में एक सटके सी लगी रहती।

(4 × 5 = 20 Marks)

(b) किसी एक अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. और जो चरित्रहीन है
उसकी रसोई में पकनेवाला चावल
कितना महीन है,
इस वक्त सचाई को जानना
विरोध में होना है।

2. अपनी ही आँखो में अपनी तस्वीर को व उनकी तस्वीर को
फिर समुद्घाटित कर न्याय की किरणों में जीवन की पीर को
मिला के अन्धतम कुहरे को चीरकर
सुनहली धूप सा निखर उठ
लोक जीवन के सूरज को प्रणाम करता हुआ
अन्याय को चुनौती दे कि उभर उठ!!

(1 × 5 = 5 Marks)

gcwcentrallibrary.in